Acharya Shri Gunadharnandi Maharaj Arts & Commerce Degree College

Navagraha Teerth Kshetra Varur, Hubballi

Dist : Dharwad *State : Karnataka* *India*

Affiliated to Karnataka University, Dharwad

International Seminar

"Literature of Indian Saints & Sharanas in the Global Scenario", On 22-Sep-2019.

★ Certificate ★

This is to Certify that Mr./Mrs/Prof/Dr. कविता छूपी

From PESIAMS, Shimoga *has*

Participated / Presented a Paper / Resource Person / Chaired a Session at International Seminar on "Literature of Indian Saints & Sharanas in the Global Scenario", on 22-Sep-2019.

Prof. Suma V. Savant Organizer	Principal	Chief Guest	स्वामिजी Swasti Shri Dharmasen Bhattarak Pattacharya Swamiji Chairman

आचार्या श्री गुन्धारंडी महाराज आर्ट्स और कामर्स डिग्री कालेज

नवग्रहा थीर्थक्षेत्र वरूर, हुब्बल्ली

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी २०१९

हिन्दी विभाग

विषय: वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतिय संत साहित्य

आलेख विषय:- -:संत साहित्य में सामाजिक चेतना:-

आलेख प्रस्तुती:

कविता यू.पी. एम ए , बी एड, एम फ़िल, (पी एच डी)

हिन्दी अध्यापिका, पी ई एस आई ए एम एस कालेज, शिवमोग्गा।

Mrs. Kavitha U.P - Assistant Professor.

PESIAMS college

Shivamogga

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारतिय संत साहित्य

–:संत साहित्य में सामाजिक चेतना:–

प्रस्तावना: भारतीय संत साहित्य स्वर्ण युग के नाम में प्रसिद्द भक्तिकाल की देन है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सम्वत १३७५ वि से १७०० वि. तक के काल–खण्ड को भक्तिकाल कहा है। संतों का जन्म ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराइयों से गिरा हुआ था। उस समय इन बुराइयों पर निर्भिकता से प्रहार करने के लिए संतों का जन्म हुआ। उन्होंने सदाचार का उपदेश देकर सामाजिक समरसत की स्थापना किये। इसमें प्रमुख, कबीर, तुलसी, दादू दयाल, रहीम, रैदास, रज्जब आदि थे। वैशिष्ट्य यह है कि आज भी यह साहित्य ना केवल भारतीय समाज में, वैश्विक परिप्रेक्ष में भी सामाजिक चेतना लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संत कवियों ने बाह्याडम्बरों का खण्डन किया, जैसा कि मूर्ति पूजा, तीर्थाटन, व्रत, रोजा, नमाज में इन्हें कोई विश्वास न था। इसके बदले हृदय कि निर्मलता और पावनता से ईश्वर की याद करना महत्व मानते थे। **"मथुरा जावै द्वारिका, भावै जावै जगन्नाथ।/ साथ संगति हरि भगति बुन, कछु न आवै हाथ॥"**

कबीर कहना है कि–चाहे मथुरा जाओ, चाहे द्वारिका। यदि अच्छा लगे तो जगन्नाथपुरी की भी यात्रा कर आओ। किंतु साधु संगति और हरि भक्ति बिना कुछ भी कल्याण नहीं होता है।

जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ण को महत्ता देकर सामाजिक कार्य प्रणाली द्वारा सही अर्थ में समाज का विकास नहीं हो पाता। लोग संकुचित घेरे में बंध जाते हैं। चंदन, तिलक, माला भेष को नमन कर उनके आश्रमों में चलनेवाले भ्रष्टचार, अनैतिक कार्यों पर ध्यान केन्द्रित नहीं करते थे। इसे संतों ने अपने वाणि से विरोध किये। कबीर कहते है कि– **"माला फ़ेरत जग मुवा गया , मिटा न मन का फ़ेर/ कर का मनका डारि दे मन का–मेनका फ़ेर।"**

यही बात बिहारी ने कहा कि– **"जपमाला छापा तिलक, सरै न एकौ कामु।/ मन काँचै नाचै वृथा साँचै राचै रामु।"**

हमारे संतों नें धर्म–जाति और संप्रदाय के नाम पर हो रहे विभेद को खत्म कर समरसता का मार्ग सुझाया। **"हिन्दू कहें मोहि राम पियारा, तुर्क कहें रहमाना,**

आपस में दोउ लडी–लडी मुए, मरम न कोउ जाना।"

इसका अर्थ: हिन्दु राम के भक्त हैं और तुर्क को रहमन प्यारा है। इसी बात पर दोनों लड कर मौत के मुंह में जा पहुंचे, तब भी दोनों में से कोई सच को न जान पाया।

कबीर ने जाति, वर्ण, ऊँच–नीच का विरोध कर समझाया सभी के अंदर एक ही आत्मा प्रभु के अंश का निवास है। शरीर भिन्न हैं। सभी की आत्मिक दृष्टी से देखो, व्यवहार करो। भेदभाव न रखो जैसे–**"कबीर कुआँ एक है पनिहारिन अनेकबरतन सबके न्यारे भरा, पानी सब में एक।"**

पथ प्रदर्शक कबीर, समाजिक असमानता, ऊंच–नीच आदि भेदभाव को मिठाने का प्रयास करते हुए निस्वार्थ सेवा भाव का महत्व बताते हुए कहते है कि–**"बडा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड खजूर।/पंछी को छाया नहीं, फ़ल लागे अति दूर॥"** अर्थात–खजूर के पेड के समान बडा होने का क्या लाभ, जो ना ठीक से किसी को छाँव दे पाता है और न ही उसके फ़ल सुलभ होते हैं।

रहिमन कहते है कि– सेवा करने केलिए बडे होने की जरुरत नहीं है। कीचड भरे तालाब पशु–पक्षियों और मानव की प्यास बुझाते हैं। समुद्र तो बहुत बडा होता है लेकिन उसका खारा पानी किसी प्राणी की प्यास नहीं बुझाता है। **"धनि रहिम जल पंक को, लघु जिय पिअत अघाय। /उदधि बडाई कौन है, जगत पिआसो जाय॥"**

संत रैदास सारे संसार की भलाई चाहनेवाले कवि हैं। उनकी कवित में सामाजिक कल्याण की भावना है। समाजिक चेतना कि दृष्टि से प्रचारक के रुप में संदेश देते हुए अपनी इच्छा प्रकट किये है कि–

"ऐसा चाहो राज में,

जहाँ मिले सबन को अन्न।

छोटा–बडो सभ–सम बसै,

रैदास रहै प्रसन्न॥"

रैदास चाहते है कि इस दुनिया में कोई भी भूखा न रहे। सब को पेट भर खाना मिले। समाज में उच्च-नीच का भेद-भाव न रहे। जाती-पाँति की दिवारें न रहें। समाज में समानता, स्वतंत्रता तथा भाईचार की भावनाएं फ़ैलें।

संत कवि जाति प्रथा के विरोधी थे। ऊँच-नीच, छुआछूत एंव वर्णाश्रम व्यवस्था को अभिशाप मानकर इन्होंने निर्भिकता से इनका खण्डन किया। उन दिनों में श्रेष्ट मानने वाले ब्राह्मण वर्ग इनके आक्रोश का शिकार बना। क्योंकि निम्न वर्ग उसे छूनना भी पाप था। उदा: **"ऊँचे कुल जनमिया, जे करनी ऊँच न होई।/सोवन कलस सुरै भरया, साधु निंदा सोइ॥"**

अर्थात-यदि कोई मनुष्य ऊँचे कुल में जन्मा है, किन्तु उसके कर्म ऊँचे नहिं है तो क्या लाभ? सोने का घडा अगर शराब से भरा हो तो भी साधु लोग ऐसे पात्र की निंदा करते हैं। आशय यह है कि मनुष्य कर्म से महान बनता है, जन्म से नहीं।

जाति से ज्ञान को महत्व देते हुए कबीर कहते है कि-**"जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान। /मोल करो तलवार का, पडा रहन दो म्यान॥"**

कबीर इसके द्वारा स्पष्ट कर रहे है कि- तलवार के मोल करिए और म्यान को छोड दिजिए । साधु कि कोई जाति, कोई धर्म नहीं होता, साधु की पहचान तो उसके ज्ञान से होती है।

गुण को पूजनीय मानते संत रैदास कहते है कि-**"ब्राह्मण मत पूजिए जो होते गुणहीन,/ पूजिए चरण क्पंडाल के जो होने गुण प्रवीन॥"**

संतो में निर्गुण शाखा के कई कवि जैसे कबीर, रैदास, दादू आदि मेहनत करके जीविका चलाते थे। अपने आदर्श जीवन के अनुभवों को वाणि के द्वारा प्रकट किये। मेहनत का फ़ल मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करने का संदेश समाज को देते हुए, कबीर जी ने श्रम द्वारा धन उपार्जन की बात कही है। इतना श्रम करो कि परिवार का पालन पोषण आराम से हो सके-

"साई इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय/ मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।"

रैदास अपनी बानी में -

"रैदास श्रम करि खाइहि,

जो लौ पार बसाय।

नेक कमाई जउ करइ,

कबहुँ न निहफ़ल जाय॥"

रैदास जाति में चामर थे। वे जूते बनाकर अपने घर–बार का पालन–पोषण करते थे। वे इस पद में कर्म की महत्ता क वर्णन करते, कहते है कि–हर एक व्यक्ति को मेहनत करके रोज–रोटी कमानी है। जो मानव नेक–नीयत से अपनी रोटी कमाता है तो उसका जीवन व्यर्थ नहीं हो जाता, वह सार्थक होता है।

जीवन की सार्थकता प्रेम में है। प्रेम से समाज में सामरस्य लाने के प्रयास में संत कबीर कहा कि–**"जिहि घट प्रेम न प्रीति रस, रसना नहीं नाम।/ ते नर या संसार में, उपजी भरा बेकाम॥"**

इसका अर्थ– जिनके हृदय में न तो प्रीति है और न प्रेम का स्वाद, जिनकी जिहवा पर राम का नाम नहीं रहता–वे मनुष्य इस संसार में उत्पन्न होकर भी व्यर्थ हैं।

उक्त समाज में फ़ैलाये वर्ग भेद, वर्ण भेद में वैषम्यता मिठाकर समाज को सुधार करने के लिए वे कहते थे कि–एक दिन ऐसा जरुर आएगा जब बि सबसे बिछुडना पडेगा, हे राजाओं! है छत्रपतियों! तुम अभी से सावधान क्यों नहीं हो जाते। **"इक दिन ऐसा होइगा, सब सूं पडे बिछोह।/ राजा राणा छत्रपति, सावधान किन होया॥"**

दया तथा सेवा का महत्व बताते हुए कबीर कहते हैं कि–**"जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।/ जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप॥"**

अर्थात, धर्म के अनुसार हमें सब पर दया करनी चाहिए। हमें लोभ से दूर रहना चाहिए क्योंकि लोभ पाप का जन्म होता है और मनुष्य लोभ के कारण गलत कार्यों में लग जाता है।

समाज को सचेत करते हुए तुलसी कहते है कि–**"ठाढो दूार दै सकै, तुलसी जे नर नीच। / निंदहि बलि हरिचंद को, का कियो करन दधीच॥"**

अर्थात–नीच स्वभाव के मनुष्य स्वयं अपने दरवाजे पर खडे भिखारी को कुछ दे नहीं सकते परंतु महादानी राजा बलि और सत्यवादी तथा दानी राजा हरिश्चंद्र की निंदा करते हैं

ऐसा नीच मनुष्य की निंदा करते हुए तुलसी कहते है कि–**"लखो गंयद लै चलत भजि स्वान सुखानो हाड।/गज गुन मोल अहार बल महिमा जान की राड॥"**

और अहिंसा के प्रबल समर्थन करते कबीर कहते कि–**" संतों पांडे निपुण कसाई/ बकरा मारि भैसा पर धावै, दिल में दर्द न आई॥"**

संत कबीर जर्जर समाज और अधःपतित मानव समुदाय को देखकर कलुषित चित्तवृत्तियों को सुधारने हेतु मुराडा लेकर बडे चले थे– **"कबीर खडा बाजार में, लिये लुकाठी हाथ/ जो घर फूँके आपना, चले हमारे साथ'।**

उस धार्मिक अरजकता के युग में संतों ने अपनी कठोर वाणी का प्रयोग कर तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, नैतिक आदि मानव जीवन में व्याप्त आशांति को दूर करके सहज साधना द्वारा जनजीवन में सुख, आनंद का संचार करने का प्रयास किया।

कबीर कहा कि–**"मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारे, क्या साहब तेरा बहिरा है/ चिंउटी के पग नेवर बाजे, सोभी साहब सुनता है।"**

संत रज्जब कहा कि–**" देवल पास मसीत हवै, दौ न ढाहै दोई/ रज्जब राम रहीम कहि, बौलें विधान न कोई॥"**

समाज सुधारण में लगे तुलसीदास कहते है कि बुरी संगति में रहकर अच्छे मनुष्य भी बुरे हो जाते हैं इसीलिए संगती की महिमा के प्रति तथा कपट विषय से समाज को सचेत करते हुए कहते कि–**"तुलसी किएँ कुसंग थिति होहिं दाहिने बामा"** और

" हृदयँ कपट बर धरि बचन कहहिं गढि छोलि ।/ अब के लोग मयूर ज्यों क्यों मिलिए मन खोलि॥"

और काम क्रोध मद और लोभ की प्रबलता से दूर रहने का संदेश देते हुए कहते कि–**"तात तीन अति प्रबल खल काम क्रोध अरु लोभ/ मुनि बिग्यान धाम मन करहिं निमिषि महुँ छोभ॥"**

और **"देस काल करता करम बचन विचार बिहिन।/ ते सुरतरु तर दारिदी सुरसरि तीर मलीन।"** अर्थात– जिन मनुष्य को देश,काल, कर्त्ता, कर्म और वचन का ज्ञान नहीं होता, वे कल्पवृक्ष के पास होने पर भी दरिद्र और गंगा के तट पर निवास करे पापी रहते हैं।

तुलसी कहते कि अफ़ीम को सर्प से भी अधिक भयंकर और घातक समझना चाहिए कि " **ब्यालहु तें बिकराल बड ब्यालफ़ेन जियँ जानु।/ वहि के खाए मरत है वहि खाए बिनु प्रानु॥"**

कबीर जीवन भर समाजिक बुराईयों के विरुद्द संदेश देते रहे और समाज को वसुदैव कुटुंबकम की ओर उत्प्रेरित करते कहते थे कि–**"जाती हमारी आत्मा, प्रान हमारा नाम।/अलग हमारा इष्ट है, गगन हमारा ग्राम॥"**

इसीतरह सामाज में समरस–समन्वय का भाव, धार्मिक एंव साम्प्रदायिक सौहार्द भाव, सभी वर्ग लिंग के लोगों में समता का भाव आदि चिंतनधारा में संतों का योगदान वैशिष्ट्य पूर्ण है।

निष्कर्ष–संतों की वाणी, अमृत की वाणी मेहसूस होती है क्योंकि,जाति–धर्म के नाम पर छिन्न–भिन्न करके स्वार्थ–साधना को सर्वोपरि मानने वाले समाज में, मनवतावादी मूल्यों को जगाये। समाज में चेतना लाये। इसीतरह भारतीय संत साहित्य तत्कालीन समाज के लिए जैसे उपयोगी थे, उससे भी अधिक वे आज उपयोगी हैं। यह सत्य है कि एक ओर संसार विज्ञान और तकनीकी में तो काफ़ी ऊंचाई हासिल की है, पर नैतिकता, धार्मिक सहिष्णुता आदि में और जागरुकता दिखाने की आवश्यकता है। हम आशा करते हैं कि–सामाजिक चेतना से अनुप्रणित समूच सन्त साहित्य की वाणियों के सहारे संसार अपना मार्ग प्रशस्त करेगा और पूरा विश्व में अमन का प्रकाश फ़ैलेगा।

संदर्भ ग्रंथः हन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–लोकभारती–इलाहबाद

कबीर ग्रंथावली–रामकिशोर शर्मा

तुलसी दोहावली–सं.रघव 'रघु'- प्रभात प्रकाशन–नई दिल्ली

कबीर दोहावली–सं.नीलोत्पल – प्रभात प्रकाशन–नई दिल्ली

रैदास बानी–सुखदेव सिंग

मेरा मन पंछी–डां.सीताराम दीन।

संत रज्जब–डां.नन्दकिशोर पाण्डेय।